Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 8 | AUGUST 2025

लाला हरदयाल और गदर पार्टी: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

साकिर हुसैन [1]

[1] **शोध छात्र इतिहास विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र हरियाणा.**

ABSTRACT:

बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में उत्तरी अमेरिका का पश्चिमी समुद्री तट पंजाब के प्रवासी भारतीयों का प्रमुख केंद्र बन गया। बड़ी संख्या में पंजाबी यहाँ आकर बसने लगे, जिनमें अधिकांश जालंधर और होशियारपुर जनपदों के कृषक थे, जो रोजगार की तलाश में इस महाद्वीप की ओर आए थे। इन प्रवासियों में कुछ लोग सीधे अपने गाँवों से आए थे, जबकि कुछ पहले ही सुदूर-पूर्व के देशों (जैसे मलाया, हांगकांग, सिंगापुर आदि) में जाकर बस चुके थे और वहाँ से अमेरिका या कनाडा पहुँचे। प्रवासियों में एक बड़ा वर्ग ब्रिटिश सेना के सेवानिवृत्त सैनिकों का भी था, जिन्हें सैनिक जीवन के दौरान अपने देश से बाहर की दुनिया को जानने और समझने का अवसर मिला था।

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
20th August 2025	22nd August 2025
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.16923094	https://zenodo.org/records/16923094

प्रस्तावना

पंजाब में व्याप्त आर्थिक संकट, बेरोजगारी और सामाजिक विषमताओं ने उन्हें विदेश पलायन के लिए प्रेरित किया। बहुत से लोगों ने विदेश जाने के लिए अपनी भूमि-जायदाद और घरेलू संपत्ति को बेच दिया अथवा गिरवी रख दिया। किन्तु अमेरिका और कनाडा में पहुँचने पर अधिकांश प्रवासियों को प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई। विशेषतः वे लोग, जो सीधे गाँवों से आए थे और जिन्हें पश्चिमी समाज एवं सभ्यता का ज्ञान नहीं था, अधिकतर इस प्रतिबंध के शिकार बने।जिन्हें वहाँ बसने की अनुमति मिली, उनका शोषण किया गया। उन्हें नस्लीय भेदभाव और जातीय द्वेष का सामना करना पड़ा। स्थानीय श्वेत मजदूर तथा उनके संगठनों ने भारतीय प्रवासियों के प्रति घोर घृणा प्रदर्शित की और उनके विरुद्ध आंदोलन तक चलाए। इस प्रकार, उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट पर बसे भारतीय प्रवासियों को आरंभिक दिनों में असमानता, शोषण और विरोध का सामना करना पड़ा।सन् 1909 में प्रवासी भारतीयों ने न्यूयॉर्क में ‘हिंदुस्तान एसोसिएशन’ अथवा ‘हिंदू एसोसिएशन’ नामक संगठन की स्थापना की। इस संस्था के अध्यक्ष भाई भाग सिंह भिक्खीविंड, सचिव जी. डी. कुमार तथा कोषाध्यक्ष भाई बलवंत सिंह खुर्दपुर थे। इस संगठन के प्रमुख उद्देश्य थे— भारत में स्वराज्य की स्थापना, राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार, स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन, कृषि एवं व्यापार के क्षेत्र में शोषण का अंत तथा औपनिवेशिक शासन द्वारा की जाने वाली लूट और उससे उत्पन्न असमय मृत्यु से मुक्ति।

जी. डी. कुमार के अस्वस्थ होने पर जब संगठन की गतिविधियों में शिथिलता आने लगी, तब उनकी जगह लाला हरदयाल ने ली। अमेरिका में क्रांतिकारी युवाओं को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित करने में लाला हरदयाल ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे राजनीतिक निर्वासन के जीवन के अंतर्गत अप्रैल 1911 में कैलिफोर्निया पहुँचे और प्रारंभिक समय में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। किन्तु शीघ्र ही वे राजनीतिक गतिविधियों में संलग्न हो गये।सन् 1912 में लाला हरदयाल ने अमेरिकी बुद्धिजीवियों, मजदूर वर्ग तथा क्रांतिकारी संगठनों के मध्य अपने विचारों का व्यापक प्रसार किया। उन्होंने प्रवासी भारतीयों की समस्याओं पर स्पष्ट रूप से अपने विचार रखे और भारतीयों के साथ-साथ अमेरिकी समाज में भी लोकप्रिय हुए। बर्कले तथा हावर्ड विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों में उनकी विद्वत्ता की विशेष ख्याति थी।लाला हरदयाल का मानना था कि भारत में विभिन्न मजहब राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं, जबकि अंग्रेजी शासन भारत की दासता का मूल कारण है। प्रवासी भारतीयों के लिए यह अत्यंत गौरव और उत्साह का विषय था कि अंग्रेज विद्वान भी लाला हरदयाल के विचारों को गंभीरता से सुनते और उनका सम्मान करते थे।लाला हरदयाल ने भाई परमानंद, तारकनाथ दास तथा तेज सिंह के सहयोग से एक “शैक्षिक समिति”का गठन किया, जिसका प्रमुख उद्देश्य अधिकाधिक भारतीय विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु अमेरिका लाना था। यह समिति विद्यार्थियों की शिक्षा, निर्वाह एवं वजीफे की व्यवस्था करती थी, जिससे प्रवासी भारतीय युवाओं में शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना का विकास किया जा सके।

लाला हरदयाल का मानना था कि भारत में विभिन्न मजहब राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं, जबकि अंग्रेजी शासन भारत की दासता का मूल कारण है। प्रवासी भारतीयों के लिए यह अत्यंत गौरव और उत्साह का विषय था कि अंग्रेज विद्वान भी लाला हरदयाल के विचारों को गंभीरता से सुनते और उनका सम्मान करते थे।उन्होंने ने भाई परमानंद, तारकनाथ दास तथा तेज सिंह के सहयोग से एक “शैक्षिक समिति” (Educational Committee) का गठन किया, जिसका प्रमुख उद्देश्य अधिकाधिक भारतीय विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु अमेरिका लाना था। यह समिति विद्यार्थियों की शिक्षा, निर्वाह एवं वजीफे की व्यवस्था करती थी, जिससे प्रवासी भारतीय युवाओं में शिक्षा और राष्ट्रीय चेतना का विकास संभव हो सके।इस समिति के सदस्यों का स्पष्ट मत था कि शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र को साम्राज्यवादी शक्तियों से मुक्त नहीं कराया जा सकता। शिक्षा न केवल राष्ट्रीय चेतना का आधार है, बल्कि स्वाधीनता आंदोलन की सफलता का भी प्रमुख साधन है। प्रवासी भारतीयों को विदेशों में प्रायः अपमानजनक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। यूरोपीय समुदाय भारतीयों को उनकी विशाल जनसंख्या और दासता की स्थिति का व्यंग्यात्मक उल्लेख कर नीचा दिखाते थे। जब भारतीय यह उत्तर देते कि उनकी जनसंख्या लगभग तैंतीस करोड़ है, जबकि ब्रिटिश मात्र तीन करोड़ और भारत में अंग्रेजों की संख्या चार-पाँच लाख से अधिक नहीं है, तब विदेशी यह प्रश्न उठाते कि इतने विशाल जनसमूह का अपना ध्वज क्यों नहीं है और वे अंग्रेजों के यूनियन जैक के अधीन क्यों रहते हैं। यह स्थिति भारतीयों को आत्मग्लानि से भर देती थी और उनमें राष्ट्रीय स्वाभिमान की तीव्र भावना

जागृत करती थी।इन्हीं परिस्थितियों में लाला हरदयाल ने 'हिंदुस्तान एसोसिएशन' की गतिविधियों को पुनर्जीवित किया। मई 1913 में उन्होंने पोर्टलैंड में हिंदी एसोसिएशन ऑफ पेसिफिक कोस्ट ऑफ अमेरिका की स्थापना की, जो शीघ्र ही 'हिंदुस्तान गदर पार्टी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके उपरांत 2 जून 1913 को सैन फ्रांसिस्को में औपचारिक रूप से 'गदर पार्टी' की स्थापना हुई। इस अवसर पर एक केंद्रीय समिति का गठन किया गया, जिसमें सोहन सिंह भकना अध्यक्ष, लाला हरदयाल मुख्य सचिव, केसर सिंह थटगढ़ उपाध्यक्ष, पंडित काशीराम कोषाध्यक्ष तथा गुलाम हुसैन उर्फ ठाकुरदास संयुक्त सचिव चुने गए।

'गदर पार्टी' का मुख्यालय 436, हिल स्ट्रीट, सैन फ्रांसिस्को में स्थापित किया गया, जिसे युगांतर आश्रम के नाम से जाना जाता था। इस केंद्र का उपयोग मुख्यतः दो उद्देश्यों के लिए किया जाता था— (1) गदर समाचारपत्र के मुद्रण और प्रसार हेतु तथा (2) स्वयंसेवकों के निवास व प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु।गदर पार्टी का प्रमुख उद्देश्य भारत में औपनिवेशिक शासन का अंत कर एक प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करना था, जो सामाजिक और आर्थिक समानता पर आधारित हो। पार्टी ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए गदर समाचारपत्र का प्रकाशन आरंभ किया, जो उर्दू, पंजाबी, गुजराती और पश्तो भाषाओं में प्रकाशित होता था। लाला हरदयाल चाहते थे कि इसकी प्रतियाँ अधिक से अधिक भारतीयों तक पहुँचाई जाए, ताकि प्रवासी भारतीयों और स्वदेश में क्रांतिकारी चेतना का प्रसार हो सके।वह सैनिक विद्रोह, सैन्य प्रशिक्षण, हथियारों के संग्रह तथा ब्रिटिश सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों को अपने पक्ष में संगठित करने की अवधारणा में विश्वास रखते थे। उनके कई क्रांतिकारी लेख गदर पत्र में प्रकाशित हुए। एक लेख में उन्होंने लिखा कि "डेढ़ सौ वर्ष पूर्व अंग्रेजों ने भारत में अपने शासन की नींव रखी थी, जो धीरे-धीरे बंगाल, मद्रास, बंबई तथा पंजाब तक फैलती चली गई। आज अंग्रेजी शासन ने देशी रियासतों को भी कमजोर कर दिया है।" उनके विचारों का केंद्रीय बिंदु यह था कि भारत से अंग्रेजी शासन का पूर्णतः उन्मूलन होना चाहिए। इसके अतिरिक्त , वे राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक समानता की स्थापना के प्रबल समर्थक थे।

गदर पार्टी ने 'गदर' नामक समाचारपत्र का प्रथम अंक 1 नवम्बर 1913 को उर्दू भाषा में प्रकाशित किया। इसके शीर्ष पर बाईं ओर "अंग्रेजी राज का दुश्मन" तथा दाईं ओर "वंदे मातरम्" अंकित था। इन दोनों के नीचे उद्घोषणा के रूप में यह पंक्ति लिखी गई थी— "भारत के नवयुवकों! हथियार लेकर शीघ्र तैयार हो जाओ।" इस प्रकार यह समाचारपत्र अपने प्रारंभ से ही प्रत्यक्षतः ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष का उद्घोषक बन गया।'गदर' अखबार की प्रमुख विशेषता यह थी कि इसका स्वरूप केवल सूचना देने तक सीमित न होकर एक सशक्त क्रांतिकारी शिक्षण माध्यम के रूप में विकसित हुआ। इसका उद्देश्य भारतीयों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित करना तथा योजनाबद्ध ढंग से क्रांतिकारी आंदोलन की ओर प्रेरित करना था।

गदर अखबार की प्रमुख विशेषता यह थी कि ,इसकी भाषा सरल, सहज थी , जिसे आम जनता आसानी से समझ सकती थी। उदाहरणस्वरूप, पहले अंक में "मेरा नाम और मेरा काम" शीर्षक से एक घोषणापत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें स्पष्ट शब्दों में कहा गया—"हमारा नाम क्या है? - गदर।""हमारा काम क्या है? -गदर अथवा क्रांति आरंभ करना।""यह क्रांति कहाँ होगी?- भारत में।""यह कब होगी?-कुछ वर्षों के भीतर।""यह क्यों होगी?-क्योंकि भारत की जनता अब अंग्रेजी शासन के शोषण और अत्याचार को और अधिक सहन नहीं करेगी।"इस प्रकार, गदर समाचारपत्र न केवल प्रवासी भारतीयों की असंतोष पूर्ण मानसिकता का प्रतीक बना, बल्कि उसने उन्हें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध संगठित, सक्रिय और क्रांतिकारी चेतना का भी विकास किया। यह पत्र प्रवासी भारतीय आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण वैचारिक और संगठनात्मक उपकरण सिद्ध हुआ।

'गदर' अखबार के माध्यम से आर्थिक आंकड़ों को बढ़ा- चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता था, ताकि भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न की जा सके। इसमें विदेशों में चल रही क्रांतियों से भारतीयों को सीख लेने की सलाह भी दी जाती थी। इसके अतिरिक्त, क्रांतिकारियों द्वारा रूसी क्रांतिकारियों की कहानियां भी छापकर वितरित की जाती थी। 'गदर' के प्रत्येक अंक में सावरकर की पुस्तक 'भारतीय क्रांति का इतिहास 1857' के खण्डों को उर्दू में प्रकाशित करके विभिन्न स्थानों पर पहुंचाया जाता था। इसमें बाल गंगाधर तिलक, अरविंदो घोष, अजीत सिंह, मैडम कामा, श्यामजी कृष्ण वर्मा और सूफी अंबा प्रसाद के विचार एवं लेख छापे जाते थें, जो भारतीयों को संघर्ष की प्रेरणा देते थे। इसके अलावा, अनुशीलन समिति और युगांतर जैसे गुप्त संगठनों के प्रशंसनीय एवं साहसिक कार्यों की जानकारी भी दी जाती थी। यह ध्यान देने योग्य है कि गदर अखबार के माध्यम से भारत में हुई राजनीतिक हत्याओं और डकैतियों को स्वीकृति दी जाती थी तथा ब्रिटिश विरोधी,जर्मनी के प्रति सहानुभूति दिखाई जाती थी। गदर अखबार के अलावा, युगांतर आश्रम ने भारत में घटित घटनाओं तथा समस्याओं पर विशेष पुस्तिका प्रकाशित की। 'फिरंगी का फरेब' नामक पुस्तिका को उर्दू और गुरुमुखी भाषा में छापा गया था। लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वालों को प्रोत्साहन देने के लिए लाला हरदयाल की 'शाबाश' नामक पुस्तिका छापी गई, जिसके जरिये लाला हरदयाल की विचारधारा का प्रसार किया गया। भारतीय जनता में अंग्रेजी राज के विरुद्ध जोश तथा गुस्सा पैदा करने के लिए 'गदर की गूंज' शीर्षक से कविताओं का एक संग्रह छापकर भारत तथा चीन, जापान, पनामा, सिंगापुर, बैंकॉक , शंघाई, हॉन्गकांग, हंगरी आदि स्थानों में वितरित किया गया। क्रांति का आह्वान करते हुये 'गदर की गूंज' में कहा गया था कि अब समय आ गया है! तलवार उठाने का, अब समय आ गया है! अपना अधिकार मांगने का, और अब समय आ गया है! विद्रोह का, आओ अब हम एक साथ इस लड़ाई में शामिल हो जाए।

गदर आंदोलन की भावी रणनीति पर कामागाटामारू प्रकरण तथा प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत का गहरा प्रभाव पड़ा। कामागाटामारू कांड ने गदर आंदोलन की गतिविधियों को नई दिशा तथा तीव्रता प्रदान की। दरअसल, कनाडा सरकार ने एक कठोर अप्रवासी कानून पारित किया था, जिसके अंतर्गत केवल वही भारतीय कनाडा में प्रवेश कर सकते थे , जो भारत से सीधे वहाँ पहुँचे हों। यह नियम वस्तुतः भारतीयों को बाहर रखने के उद्देश्य से बनाया गया था, क्योंकि उस समय भारत से कनाडा तक की कोई प्रत्यक्ष समुद्री परिवहन व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी।यद्यपि, इससे पूर्व नवम्बर 1913 में कनाडा की सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे 35 भारतीयों को प्रवेश की अनुमति प्रदान कर दी थी जो सीधे भारत से नहीं आए थे। इस न्यायिक निर्णय ने प्रवासी भारतीयों में नई आशा का संचार किया। इसी उत्साह से प्रेरित होकर सिंगापुर निवासी भारतीय गुरदीत सिंह ने हांगकांग स्थित एक जर्मन शिपिंग एजेंट मिस्टर बून से एक जहाज किराये पर लिया। उन्होंने दक्षिण एवं पूर्वी एशिया के विभिन्न हिस्सों में रह रहे 376 भारतीयों को संगठित कर उन्हें कनाडा ले जाने का निश्चय किया। परिणामस्वरूप ये यात्री कामागाटा मारू नामक जहाज पर सवार होकर 4 अप्रैल 1914 को वैंकुवर की ओर प्रस्थान कर गये। यात्रा के दौरान जापान के याकोहामा बंदरगाह पर कुछ गदर क्रांतिकारी इन यात्रियों से मिले और उन्हें प्रेरणादायी क्रांतिकारी पर्चे वितरित किए। इस घटना ने यात्रियों के बीच राजनीतिक चेतना को और प्रबल किया। उधर, पंजाब प्रेस ने चेतावनी दी कि यदि इन भारतीय यात्रियों को कनाडा में प्रवेश से वंचित किया गया तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। दूसरी ओर, वैंकुवर के कुछ समाचार पत्रों ने पंजाब प्रेस की आलोचना करते हुऐ इस प्रयास को कनाडा की संप्रभुता पर अतिक्रमण बताया।इस बीच, कनाडा सरकार ने अपने अप्रवासी कानून में संशोधन कर उन कमियों को दूर कर लिया था, जिनके कारण सर्वोच्च न्यायालय ने पूर्व में 35 भारतीयों को प्रवेश की अनुमति दी थी। इस प्रकार, जब कामागाटामारू जहाज वैंकुवर पहुँचा, तब प्रवासियों को नए कानून का सामना करना पड़ा, जिसने अंततः इस पूरे प्रकरण को गदर आंदोलन के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ बना दिया। जब जहाज़ वैंकुवर के तट के समीप पहुँचा, तो उसे बंदरगाह में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई और पुलिस बल ने जहाज़ को तट से दूर ही घेर लिया। यात्रियों के अधिकारों की कानूनी रक्षा हेतु हुसैन रहीम, सोहनलाल पाठक तथा बलवंत सिंह के नेतृत्व में एक'शोर कमेटी' अथवा 'तटीय समिति' का गठन किया गया। इस समिति ने यात्रियों के समर्थन में चंदा एकत्र किया, सभाएँ आयोजित कीं और विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से अपने असंतोष को प्रकट किया।

इसी समय भारत में भी औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध क्रांति करने की धमकी दी गई। दूसरी ओर, अमेरिका में गदर पार्टी के नेताओं—भगवान सिंह, बरकतुल्लाह, रामचंद्र और सोहन सिंह—ने विभिन्न स्थानों पर अनेक सभाओं का आयोजन किया और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध तीव्र प्रचार अभियान प्रारम्भ किया। उन्होंने प्रवासी भारतीयों से आह्वान किया कि वे संभावित युद्ध की स्थिति में भारत लौटकर जनता को संगठित करें और व्यापक विद्रोह में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

गदर पार्टी के क्रांतिकारियों का विचार था कि यदि ब्रिटेन विश्व युद्ध में सम्मिलित होता है, तो भारतीयों के लिए स्वतंत्रता आंदोलन को तेज़ करने का यह एक सुनहरा अवसर होगा। तथापि, कनाडा सरकार पर इस प्रकार के किसी भी दबाव अथवा चेतावनी का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और अंततः कामागाटा मारू को कनाडा की सीमा से बाहर कर दिया गया। जब तक यह जहाज योकाहामा पहुँचा, तब तक प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो चुका था। औपनिवेशिक सरकार ने आदेश जारी किया कि जहाज को सीधे कलकत्ता लाया जाए और मार्ग में किसी भी यात्री को उतरने की अनुमति न दी जाए।प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ के साथ

ही गदर पार्टी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध खुले संघर्ष की घोषणा करते हुए इसे "ऐलान-ए-जंग" के रूप में प्रचारित किया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु व्यापक स्तर पर क्रांतिकारी पर्चों का वितरण किया गया। पार्टी के प्रमुख नेताओं ने जापान, फ़िलीपींस, चीन, हांगकांग, मलाया, सिंगापुर तथा बर्मा में सक्रिय भारतीय प्रवासियों को संगठित कर उन्हें भारत भेजने की योजना बनाई, ताकि वे वहाँ जाकर स्वतंत्रता संग्राम को सशक्त बना सकें।अगस्त 1914 के आरंभ में कैलिफ़ोर्निया और ओरेगान के विभिन्न भारतीय केंद्रों पर गदर पार्टी द्वारा विशाल जनसभाओं का आयोजन किया गया। इन सभाओं में प्रवासी भारतीयों ने बढ़-चढ़कर सहयोग दिया और लगभग 2000 डॉलर की धनराशि एकत्रित की गई। इन जनसभाओं में गदर पार्टी के प्रमुख नेता—रामचंद्र, मोहम्मद बरकतुल्लाह, भगवान सिंह एवं अमर सिंह—ने ओजस्वी भाषण दिए, जिनमें उन्होंने ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए प्रवासी भारतीयों को प्रेरित किया।इसी क्रम में, 4 अगस्त 1914 को सैन फ्रांसिस्को में रामचंद्र तथा भगवान सिंह के नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण जनसभा आयोजित की गई, जिसमें लगभग 300 सिक्ख क्रांतिकारी सम्मिलित हुए। इस सभा में सर्वसम्मति से घोषणा की गई कि विदेशों में रहने वाले भारतीय तत्काल भारत लौटने की तैयारी करें और भारत पहुँचकर ग्रामीण जनता तथा भारतीय सैनिकों के सहयोग से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध व्यापक सशस्त्र संघर्ष प्रारम्भ करें।

यह ध्यान देने योग्य है कि गदर पार्टी की गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम किसी प्रकार की गुप्त कार्यवाही तक सीमित नहीं थे, बल्कि इन्हें सार्वजनिक मंचों, सभाओं और पार्टी साहित्य के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से प्रचारित किया जाता था। यहां तक कि अमेरिकी समाचार पत्रों में भी इन योजनाओं और गतिविधियों का विवरण नियमित रूप से प्रकाशित होता रहा। इस खुले प्रचार से जहाँ एक ओर प्रवासी भारतीयों को भारत लौटकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन मिला, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन भी अत्यधिक सतर्क हो गया। फलस्वरूप, कनाडा और अमेरिका से भारत की ओर प्रस्थान करने वाले जहाज़ों तथा प्रवासी यात्रियों की कड़ी जांच-पड़ताल प्रारंभ कर दी गई। अनेक ऐसे भारतीय, जिन्होंने अवैध रूप से प्रवेश करने का प्रयास किया, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।गदर आंदोलन के विचारों का अमेरिका में प्रवासी भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ा, इसकाअंदाजाओरेगान टेलीग्राफ के 7 अगस्त 1914 के अंक में प्रकाशित एक रिपोर्ट से मिलता है। इस रिपोर्ट का शीर्षक था— "क्रांति में लड़ने के लिए हिंदू अपने देश को रवाना"। वैंकूवर से रवाना होने वाले जहाज़ को ब्रिटिश भारत सरकार ने गदर पार्टी की उस व्यापक रणनीति का हिस्सा माना, जिसके अंतर्गत प्रवासी भारतीयों को संगठित कर भारत भेजा जा रहा था। यात्रियों के साथ किए गए अमानवीय व्यवहार ने प्रवासी भारतीयों की चेतना को और अधिक प्रखर किया तथा ब्रिटिश विरोधी भावनाओं को गहराई प्रदान की।

REFERENCES

1. होम पॉलीटिकल, अप्रैल, 1908, प्रोसीडिंग्स संख्या 1, दाखिल दफ्तर, जिल्द नं. 1, जनवरी 1953

2. होम पॉलिटिकल, दाखिला दफ्तर, 26 जुलाई 1908, प्रोसीडिंग्स संख्या 21- 26, अक्टूबर 1912, प्रोसीडिंग्स संख्या 61-64

3. हरीश. के. पुरी, गदर मूवमेंट: आईडियोलॉजी ऑर्गेनाइजेशन एंड स्ट्रेटजी, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 1979; घाट (क), सितंबर 1911 प्रोसीडिंग्स संख्या 4-7

4. भाई हरनाम सिंह टुंडी लाट तथा भाई परमानंद, मेरी आत्मकथा

5. बाबा ज्वाला सिंह ठठियां तथा बाबा हरनाम सिंह टुंडीलाट की आत्मकथाओं के आधार पर

6. मास्टर हरि सिंह, पंजाब पीजेंट इन फ्रीडम स्ट्रेगल, वॉल्यूम-2, नई दिल्ली, 1984

7. विश्वामित्र उपाध्याय, विदेशों में भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन, प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988

8. जी. एस. देओल, दि रोल ऑफ़ दि गदर पार्टी इन द नेशनल मूवमेंट, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1969

9. 'गदर' अखबार, 1 नवंबर 1913

10. गुरचरन सिंह सहिंसरा, गदर पार्टी का इतिहास प्रथम-भाग 1912-17, देश भगत यादगार कमेटी, जालंधर, 2013

11. बाबा हरनाम सिंह टुंडीलाट का बयान, पृष्ठ 100; नोट- बाबा हरनाम सिंह टुंडीलाट गदर पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। उन्हें प्रथम लाहौर षड्यंत्र केस में मौत की सजा सुनाई गई थी। परंतु, वायसराय लॉर्ड हार्डिंग ने उनकी सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया था इसके अलावा वे किसान आंदोलन में सक्रिय रहे।

12. होम पॉलिटिकल, फाइल संख्या 42-43, जनवरी 1914

13. होम पॉलीटिकल क, प्रोसीडिंग संख्या 10-11, जून 1914

14. बिपिन चंद्र एवं अन्य, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990

15. भैरव लाल दास, गदर आंदोलन का इतिहास, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2020

16. होम पॉलिटिकल क, प्रोसीडिंग संख्या 67-68, मई 1914

17. गुरचरन सिंह सहिंसरा, गदर पार्टी का इतिहास प्रथम-भाग 1912-17

18. मन्मथनाथ गुप्त,'ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ द रिवॉल्यूशनरी मूवमेंट इन इंडिया', सोम्या पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1972

19. आर. सी. दत्त, हिस्ट्री ऑफ़ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया वोल्यूम-1, फिरमा के. एल. मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1963

20. एफ. सी. आईसेमान्गर एवं स्लैटरी, एन अकाउंट ऑफ़ गदर कन्सपेरेसी1913-1915, अर्चना पब्लिकेशन, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली, 1919

21. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड- 3, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1965; होम पॉलिटिकल ए, प्रोसीडिंग्स संख्या 201, फरवरी 1916

22. सोहन सिंह जोश, हिंदुस्तान गदर पार्टी, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1977

23. जेराल्ड कैम्पवेल केर, पॉलिटिकल ट्रबल इन इंडिया 1907-1917, एडिशन इंडिया, कलकत्ता ,1960

24. विश्वामित्र उपाध्याय, विदेश में भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन, प्रगतिशील जन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

25. बिपिन चंद्र तथा अन्य, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990